विश्व-सम्बन्धी युक्ति
(Cosmological Argument)

Cosmos का अर्थ संसार या सृष्टि है। अतः यह सृष्टि सम्बन्धी प्रमाण है। अन्य कार्यों के समान सृष्टि भी एक कार्य है। कार्य अकारण सम्भव नहीं अर्थात् बिना कारण के कार्य नहीं हो सकता। इसी के आधार पर यह कहा जाता है कि स्रष्टा के बिना सृष्टि नहीं। स्रष्टा (ईश्वर) कारण है और सृष्टि (संसार) उसका कार्य। अतः इस तर्क के आधार पर कारण से कार्य का अनुमान किया जाता

Scanned by TapScanner

है।[1] इस तर्क को आदि कारण विषयक तर्क भी कहते हैं, क्योंकि यह कारण-कार्य की परम्परा में ईश्वर को सर्वप्रथम या आदि कारण मानता है। इसे आकस्मिकता परक तर्क भी कहते हैं, क्योंकि यह आकस्मिकता के आधार पर ईश्वर की सत्ता सिद्ध करता है। इस तर्क का प्रयोग प्राचीन युग, मध्य युग और आधुनिक युग तीनों में किया गया है। अतः यह तर्क सभी युगों का महत्वपूर्ण तर्क माना जाता है। इस तर्क के निम्न-लिखित रूप हैं—

(क) आकस्मिकतापरक तर्क—इस तर्क के समर्थकों का कहना है कि विश्व आकस्मिक एवं क्षणिक है। यहाँ की हर वस्तुएं विनाशी और परिवर्तनशील हैं। किसी भी वस्तु की स्वतन्त्र सत्ता नहीं, जगत के समान जीवन भी क्षणिक है। इस क्षणिक जीवन और जगत की व्याख्या स्वयं नहीं हो सकती, अर्थात् कोई भी सांसारिक पदार्थ स्वयं अपनी व्याख्या नहीं कर सकता। जीवन और जगत तो आकस्मिक वस्तुओं की एक शृंखला है। जिसमें एक आकस्मिक वस्तु दूसरी पर और दूसरी तीसरी पर निर्भर है। इस शृंखला में अनवस्था दोष है। शृंखला में कहीं विश्राम नहीं। इस अनवस्था दोष से बचने के लिए हमें एक आवश्यक स्वतंत्र और वास्तविक सत्ता को स्वीकार करना होगा। अतः आकस्मिकता के आधार पर आवश्यक ईश्वर का अनुमान होता है। ईश्वर ही विश्व का आधार है। स्पष्ट है कि विश्व की आकस्मिकता से आवश्यक प्राणी के रूप में ईश्वर का अनुमान किया गया है। इस तर्क को केयर्ड महोदय ने इस प्रकार व्यक्त किया है—आकस्मिक विश्व का अस्तित्व है, अथवा हमारे तात्कालिक अनुभव का विश्व आकस्मिक है, अतः एक निरपेक्ष आवश्यक सत्ता का अस्तित्व है।[2] थॉमस ऐक्विनस और लाइबनिट्ज ने भी इस तर्क का प्रयोग किया है। ऐक्विनस का कहना है कि कोई ऐसी सत्ता (ईश्वर) है जो सभी सांसारिक विषयों को धारण किये रहती है। इस अनिवार्य सत्ता का नाम ही ईश्वर है। जो स्वयं निराधार होकर भी सभी आकस्मिक विषयों का आवश्यक आधार है। लाइबनिट्ज महोदय ने बतलाया है कि संसार की प्रत्येक वस्तु आकस्मिक है क्योंकि इनका अभाव या अनस्तित्व सोचा जा सकता है। आकस्मिक वस्तुओं के लिए पर्याप्त कारण होना चाहिए और वह पर्याप्त कारण ईश्वर ही है।

(ख) कारणतापरक तर्क—यह बड़ा प्रचलित तर्क है। संसार में प्रत्येक कार्य का कोई कारण अवश्य रहता है अर्थात् अकारण कोई भी घटना नहीं घट

Scanned by TapScanner

सकती अथवा किसी भी कार्य का अस्तित्व नहीं। संसार भी एक कार्य है। यहाँ की प्रत्येक वस्तुएं कारण-जन्य हैं। कारण-कार्य के विश्लेषण से पता चलता है कि प्रत्येक कार्य सकारण है परन्तु यदि हम आगे बढ़ते जांय तो अनवस्था दोष होगा। इस दोष से बचने के लिए हमें आदि कारण के रूप में ईश्वर को स्वीकार करना होगा, परन्तु ईश्वर सबका कारण होते हुए भी स्वयं अकारण है, सर्वाधार होते हुए भी स्वयं निराधार है। रेने देकार्त ने इस तर्क के आधार पर ईश्वर की सत्ता सिद्ध की है। उनका कहना है कि प्रत्येक कार्य का कोई कारण अवश्य होता है। मानव के मन में ईश्वर विषयक प्रत्यय है, इसका भी कारण अवश्य होना चाहिए, परन्तु मानव के मन में ईश्वर के पूर्ण, अनन्त, असीम तथा सर्वज्ञ होने का प्रत्यय है। इस प्रत्यय का कारण ससीम, अल्पज्ञ और सांत मानव नहीं हो सकता। यदि मानव पूर्ण और सर्वज्ञ प्रत्यय का कारण होता तो अपने आपको पूर्ण और सर्वज्ञ बना लेता। मानव अपूर्ण और अल्पज्ञ है। इससे सिद्ध होता है कि असीम, अनन्त और सर्वज्ञ प्रत्यय का कारण ईश्वर ही है।

(ग) गतिमूलक तर्क—विश्व में गति है। इसको अस्वीकार नहीं किया जा सकता। एक गति दूसरी गति से उत्पन्न होती है। इसे भी अस्वीकार नहीं किया जा सकता। गति की परम्परा अनन्त है परन्तु इसे अनन्त मानने पर अनवस्था दोष होगा, कहीं विश्राम लेना ही पड़ेगा। अतः एक आदि गति की कल्पना करनी होगी। इस आदि गति का स्रोत ईश्वर है, जो सम्पूर्ण गति का आधार है। इससे ईश्वर की सत्ता सिद्ध होती है।

विश्व-सम्बन्धी युक्ति की आलोचना—उपरोक्त प्रमाण विश्व-सम्बन्धी है क्योंकि यह विश्व को कार्य मानकर इसके कारण के रूप में ईश्वर का अस्तित्व सिद्ध करता है। यह महत्वपूर्ण तर्क तो है परन्तु इसमें निम्नलिखित दोष हैं—

(क) ह्यूम महोदय ने विश्व-सम्बन्धी युक्ति का बड़े सबल तर्कों के साथ खण्डन किया है। ह्यूम का कहना है कि कारण-कार्य का नियम स्वतः सिद्ध नहीं। कारण और कार्य के सम्बन्ध को हम अनिवार्य सम्बन्ध मान लेते हैं परन्तु यह केवल एक मान्यता है, इसमें वैज्ञानिक निश्चय नहीं। अतः कारण-कार्य के नियम को अनिवार्य मानकर ईश्वर के अस्तित्व का अनुमान करना सही नहीं। कारण-कार्य के आधार पर हम प्रत्येक कार्य या घटना का कोई कारण खोजते हैं और जहाँ रुक जाते हैं उसे ही आदि कारण (ईश्वर की संज्ञा) देते हैं। यह तो मात्र अनवस्था दोष से बचने का एक उपाय है। वस्तुतः इससे ईश्वर की सत्ता सिद्ध नहीं होती। दूसरे ह्यूम का कहना है कि संसार के सभी कार्य ससीम और सान्त हैं। इनका कारण भी ससीम और सांत ही होना चाहिए। अतः इनका कारण असीम और अनन्त ईश्वर

Scanned by TapScanner

नहीं। तीसरे हम प्रत्येक घटना को सकारण मानते हैं और अन्तिम कारण को ईश्वर की संज्ञा देते हैं। इस अन्तिम कारण को हम प्रकृति क्यों नहीं मान लेते। ईश्वर की अपेक्षा प्रकृति को मानकर भी हम अनवस्था दोष से बच सकते हैं।

(ख) काण्ट महोदय ने भी बड़े जोरदार शब्दों में इस तर्क का खण्डन किया है। उनका कहना है कि कारण-कार्य नियम तो सत्य है परन्तु यह अनुभव सापेक्ष है। तात्पर्य यह है कि हम अनुभव में आने वाले सभी विषयों की व्याख्या इस नियम से कर सकते हैं। ईश्वर अनुभवेतर विषय है, उस पर यह नियम लागू नहीं होता। वह कार्य-कारण के नियमों के ऊपर है। कार्य-कारण नियम तो बुद्धि का विकल्प है। जो बुद्धि के परे अर्थात् अबौद्धिक विषय है वह कार्य कारण नियम की सीमा के परे है। दूसरी बात यह है कि विश्व-सम्बन्धी युक्ति का प्रयोग ईश्वर के सम्बन्ध में करना उचित नहीं। कारण-कार्य के नियम के अनुसार कारण और कार्य में समरूपता होनी चाहिए। तात्पर्य यह है कि जो गुण कार्य में है वह कारण में अवश्य होना चाहिए। विश्व सम्बन्धी युक्ति में यह बतलाया गया है कि कार्य तो क्षणिक है परन्तु इसका कारण (ईश्वर) सनातन है। यह दोनों बातें एक साथ सिद्ध नहीं हो सकतीं।

(ग) समकालीन दार्शनिकों ने भी इस युक्ति का खण्डन किया है। ए० जे० एयर का कहना है कि सम्पूर्ण विश्व एक कार्य की शृंखला है। यह मानकर हम इसके कारण की खोज में लग जाते हैं। वस्तुतः हमारे लिए खोज का विषय है—यह शृंखला या प्रवाह क्यों है? इसी प्रकार रसेल महोदय का कहना है कि किसी कार्य विशेष के बारे में तो कारण पूछा जा सकता है परन्तु कार्य प्रवाह का कारण पूछना तो व्यर्थ है। जो किसी अंश पर लागू होता है उसे सम्पूर्ण पर लागू करना दोषपूर्ण है।

(घ) जे० हॉस्पर्स ने इस तर्क की आलोचना करते हुए बतलाया है कि इस तर्क से ईश्वर के गुणों पर कोई प्रकाश नहीं पड़ता। यह केवल ईश्वर के अस्तित्व को सिद्ध करता है। धर्म के क्षेत्र में ईश्वर की अनेक विशेषताओं को स्वीकार किया जाता है, जिनका महत्व उनके अस्तित्व से बढ़कर है।

(ङ) एच० राइखेनबाख़ ने इस युक्ति का विरोध करते हुए कहा है कि यह निरर्थक शाब्दिकता (Verbalism) है। किसी पद का प्रयोग कहीं पर सार्थक और कहीं निरर्थक होता है। उदाहरणार्थ—किसी सन्तान वाले व्यक्ति से यह पूछना कि वह किसके पिता हैं, सार्थक है परन्तु सन्तानहीन व्यक्ति से यह प्रश्न पूछना निरर्थक है। सम्पूर्ण विश्व का कारण पूछना तो सन्तानहीन व्यक्ति से पिता होने की बात पूछने के समान है। कारण शब्द से किन्हीं दो वस्तुओं के बीच का सम्बन्ध प्रकट

Scanned by TapScanner